ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा

Sushma Yadav

Research Scholar, Department of History, Faculty of Social Science, Banaras Hindu University

Supervisor- Mridula Jaisawal

Email ID – kmyadavsushma@gmail.com

Varanasi – 221005

How to Cite the Article: Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i5.2026.365-381

Keywords	*Abstract*
प्रेम, समाजसत्ता, अर्थसत्ता, धर्मसत्ता, राजनीतिकसत्ता, पारलौकिकता, भक्ति आन्दोलन, समाज, संतकवि, संतसमाज, निर्भीक, सत्य, प्रेमाभक्ति, योद्धा, रैदास, कबीर, मीरा, ऊंदा, राणा	भारतीय इतिहास का जब हम आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विभिन्न आयामों पर नजर दौड़ाते हैं तो हमें अनेक परिवर्तन व बदवलाव दिखाई पड़ते हैं समय-समय पर। इन बदलावों में तमाम ऐतिहासिक घटनाएं होती हैं तमाम चरित्र होतें हैं। 6वीं शताब्दी से लेकर 12 वीं शताब्दी तक एवं 12वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक का भारतीय इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण मान जाता है इस समयावधि में भारत में एक लहर दौड़ी जन्मी वह लहर थी भक्ति की। विशेषकर उत्तरी भारत के सन्दर्भ में देंखे गर तो लगभग-लगभग 12वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक की समयावधि केवल भक्ति एक सामान्य लोगों के जीवन तक या कह लीजिए व्यक्तिगतसत्ता तक ही सीमित नहीं रह गयी थी। यह एक सामाजिक, धार्मिक आन्दोलन के रूप में परिवर्तित हो गया था। क्योंकि यह भक्ति सिर्फ पारलौकिकता तक भर की बात नहीं रह गयी थी बल्कि इसके घेरे में आने वाले संतकवि अब जिरह कर रहे थे, संवाद कायम कर रहे थे न सिर्फ ईश्वर से बल्कि अपने आसपास की समाजसत्ता से, राजनीतिक सत्ता से, धार्मिकसत्ता से और अर्थसत्ता से। यह भारतीय इतिहास या भक्ति आंदोलन की कमी रही है उनके जानने वाले , या

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

हम सबकी भी। कि जैसे ही भक्ति आन्दोलन या संत शब्द सुनाई दिखाई पड़ता है तो पहले-पहल हमारे मन-मस्तिष्क में एक पुरुष छवि आकार ले लेती। साधना, आराधना, उपासना, पारलौकिकता, ज्ञानी, प्रेमी, ध्यानी जैसे शब्दों के जुबान पर आते ही मस्तिष्क में एक पुरुष छवि ही कौंधती है, और हमारे दिलो-दिमाग में कबीर, रैदास, सूर, तुलसी, दादू, नानक आदि पुरुष संतकवि छा जातें हैं। इसका परिणाम यह होता है कि इस भक्ति आन्दोलन की धारा में इस लहर में आने वाली महिला संतकवि कहीं बहुत-बहुत दूर पीछे छूट जातीं हैं। चाहे मीरा हों, लल्लावेद हों या अणडाल, राबिया, सहजोबाई, दयाबाई और अनेक महिला संतकवि। ये महिला संत कवि भी अपने समाज से, घर-परिवार, सम्बंधों रिश्तों से उसी प्रकार विद्रोह करके अपनी एक अलग राह स्थापित की थी जैसे पुरुष संतकवि। इन महिला संतकवियों को पुरुष संतकवियों से कहीं अधिक इनके सामने समाज की, घर-परिवार की, परम्पराओं की, लोक-लाज-मर्यादा की बेड़ियां थी इनके पैरों में फिर भी उन्होंने उन सारे ऊपरी बातों और दिखावे के जीवन को समाज द्वारा निर्मित सामाजिक ढांचे को तोड़कर, छोड़कर अपने आपको स्वतंत्र करके अपने निज को पहचाना था। इन्हीं महिला संतकवि में एक योद्धा थी मीरा। जिसे हर कोई जानता है, पहचानता है उनकी कृष्ण भक्ति की लिए प्रेम के लिए। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह भक्ति केवल परालौकिक भक्ति महज कृष्ण भक्ति भर ही थी या कहीं इससे अधिक उस व्यवस्था के प्रति विद्रोह था जिसने महिलाओं के जीवन को केवल चारदीवारों में कैद करके रखा दिया जिसने महिला के जीवन को पुरुष के आधीन करके रख छोड़ा था। क्या यह भक्ति यह प्रेम कर पाना मीरा के लिए इतना सरल सहज रास्ता था। जिस पर चलकर उन्होंने यह प्रसिद्ध पाई या यह अमरता हासिल की कि मीरा अपने प्रेम और प्रेमी कृष्ण को पा सकी। दूसरा यह क्या मीरा महज एक आसमानों में कहीं दूर बसने वाले परमात्मा की पुजारन ही मात्र थी या कहीं इससे अधिक चुनौती देने वाली एक योद्धा उस समाज की जो समाज महिला को केवल अबला लाचार मनोरंजन का साधन और देहभर समझता था समझता है इस लेख में मीरा के इसी योद्धा रूप का उनके व्यक्तित्व को समझने का और सामने लाने का एक प्रयास किया गया है।

मूल आलेख-

प्रेम के सन्दर्भ में नारद कहते हैं कि जब प्रेम या भक्ति उसके प्रति इतनी प्रगाढ़ हो जाती है तो व्यक्ति सभी शास्त्रों का त्याग कर देता है। यह प्रेम यह परमप्रेमाभक्ति सभी शास्त्रों से ऊपर की होती है।

"वेदानपि सन्नयस्यति केवलमविच्छिन्नानुरागम् लभते"[i] (सूत्र 49)

नारद के अनुसार यह भक्ति ही परमप्रेम रूपा है

स: त्वस्मिन परमप्रेम रूपा:[ii] (सूत्र 3)

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

अमृत के समान सबको तारने वाली होती है यह प्रेमा भक्ति। यह स्वयं भक्त को तारती ही है बल्कि साथ साथ समस्त लोकों को जगत को भी तार देती है।

अमृत स्वरूपा च (सूत्र 3)

स तरति स तरति स लोकांस्तारयति[iii](सूत्र 50)

प्रेम होता ही ऐसा है जो हर भय हर बंधन का त्याग कर देता है और मनुष्य को खरे सोने की भांति शुद्ध बना देता है। प्रेमी व्यक्ति लोक-लाज-मर्यादा से नहीं डरता फिर। न ही वो समाज द्वारा स्थापित सामाजिक ढर्रों पर चलता है। प्रेमी व्यक्ति सभी परमपरों और मान्यताओं से उपर उठकर सोंचता है और अपनी एक अलग राह बनाता है। प्रेम में बंधन जैसी कोई बात नहीं होती है वहां सम्पूर्ण स्वच्छता स्वतंत्रता होती है और जब यह प्रेम अपने उस आराध्य के प्रति हो जो कण-कण में रमता हो वहां तो फिर कोई बंधन काम नहीं करता है। न ही कोई सामाजिक चोंचले। प्रेम के इस सम्बन्ध में जो सबसे पहले घटित होता है वह है अपने मैं की मृत्यु अपने भीतर ही मृत्यु। जीते जी ही मृत्यु! फिर वहां किसी का डर क्यों रहेगा ? न खोने न पाने का। वहां तो उस परम से मिलाप हुआ है जहां आकर सब शून्य हो जाता है।

सन्दर्भ कबीर साहब कहतें है –

जिस मरने थै जग डरे, सो मेरे आंनद

कब मरिहूं कब देखिहूं पूरन परमानंद।[iv]

मीरा के लिए भी यह प्रीति यह लग्न यह प्रेम निडरता लेकर आया था उनके जीवन में। जहां मरने का शरीर की मृत्यु का कोई डर कोई भय नहीं रह गया था। योद्धा युद्ध के मैदान में जीवन और मृत्यु को पीछे छोड़कर जाता है। मीरा को भी इस प्रेम ने जीवन के इस समर में योद्धा बना दिया था। उन्हें अपने प्रेम पर इतना विश्वास था कि वह हर संकट से उन्हें बचा लेगा। राणा द्वारा की गयी मारने की कोशिश और अपने आराध्य के प्रति अटूट विश्वास और प्रेम दोनों का बताती हुए कहती हैं मीरा

मीरा मगन भई हरि गुण गाए

सांप पिटारा राणा भेज्यो, मीरा हाथ दियो जाए

नहाय धोए जब देखण लागी, सालिगराम गई पाए

जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाए

नहाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर ऊंचाय

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय

साझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय

मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखें विघन हटाय

भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाए[v]

ऐसा नहीं था मीरा को कष्ट नहीं हो रहा था। पर व्यक्ति जब कुछ ऊंचा पाने की ओर या अपनी तलाश में समाज की लीक से परे अपनी राह चुनता है तो सम्भव है उसके मार्ग में कठिनाइयां, रुकावटें आयेंगी ही आयेंगी और सबसे ज्यादा लड़ना और विरोध का सामना करना पड़ता है अपने नाते-रिश्तेदारों कुटुंब परिवार का उसके बाद समाज का। मीरा ने भी सभी कष्टों को सहा विरोध का सामना किया अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने प्रेम और अस्तित्व के लिए। लेकिन हार नहीं मानी मीरा ने । अपनी स्वतंत्रता का प्रेम का अपने आराध्य का अपने अस्तित्व का समझौता नहीं कर लिया इन विरोध के चलते इन कष्टों के चलते भौतिक सुख सुविधाओं से। उन्होंने साफ-साफ अपने सुसराल वालों के साथ रहने से और समाज के बाकी लोगों की भांति उल्टी चाल चलने से इंकार कर दिया और महल जीवनको त्याग राहों के राहगीर प्रेमी बन गयी, वह ऐसी योद्धा बन गयी जिसका जीवन तो बस समर के मैदान के बीच में बीत जाता है।

मीरा राणा से कहती हैं

राणा जी ! अब न रहुंगी तोरे हटकी।

साध संग मोहि प्यारा लागै, लाज गयी घूंघट की।

पीहर मेड़ता छोड़ा आपणा, सुरत निरत दोऊ चुटकी।

सतगुरु मुकुर दिखाया घट का, नाचुंगी दे दे चुटकी।

हार सिगार ल्यो अपना, चूड़ो कर की पटकी।

मेरा सुहाग अब मोकूं दरसा, और न जाने घट की।

महल किला राणा मोहि न चाहिए सारी रेशम पट की।

हुई दीवानी मीरा डोलें केस लटा सब छिटकी।[vi]

पति की मृत्यु की बाद मीरा का उनके सुसराल वालों ने जीना दूभर कर दिया था उनके इस प्रेम इस कृष्ण भक्ति की खातिर। मीरा उस राजपुताने की थी जहां पति के बाद स्त्री स्वत: ही चिंता के साथ सती हो जाया करती थी या जबरन समाज उससे ऐसा करवाता था ताकि उस स्त्री को अपने पति के साथ जलकर मोक्ष मिल जाए । मोक्ष तो क्या चाह होगी स्त्री के

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

लिए उस समाज के लिए बल्कि इस डर से कि कहीं पति की मृत्यु के बाद वह स्त्री किसी और के साथ जाकर नयी दुनिया न बसा ले जिससे उनके कुल की मर्यादा को दाग न लगे इसी डर के मारे समाज द्वारा मोक्ष का नाम देकर यह सारी ज्यादतियां की जाती थी एक विधवा स्त्री के साथ। मीरा का सती न होना बल्कि अब और अधिक कृष्ण भक्ति के रस में डूबा हुआ होना यह उस पितृसत्तात्मक समाज के उसकी सोच पर एक तमाचा था। और एक पूरी तरह इंकार था उस व्यवस्था के प्रति जिस व्यवस्था में तमाम महिलाएं जी रही थी। जिन्होंने स्वयं की भी अपनी यही पहचान मानकर जी रही थी सहज तरीके से। केवल यह पुरूष की बात भर नहीं थी बल्कि महिलाओं की भी जो मीरा को ही ग़लत ठहराती थी और उस कुकृत्य में शामिल थी जो मीरा को कुलकंलकनी कुलनाशिनी समझती थी। यह बगावत उन महिलाओं से भी थी मीरा की।

मीरा कहती हैं –

पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे

मैं तो मेरे नारायण की

आपांहि हो गई दासी रे

लोग कहें मीरा भई बावरी

न्यात कहे कुलनासी रे[vii]

पुरुष तो औरत को बस हाड़ मांस का पुतला समझता ही है। औरतें स्वयं औरत की दुश्मन उससे अधिक होती है। एक बंधनयुक्त परम्पराओं में जीने वाली स्त्री कभी भी एक स्वतंत्र महिला को बर्दाश्त नहीं कर सकती क्योंकि वह स्वयं ही अपनी पहचान बस इतनी भर समझती है कि गोया वह पुरुष के लिए जन्मी है पुरुष की कामुक इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए और घर गृहस्थी संभालने और बच्चे जनने के लिए। सिर्फ बात अगर पुरुष विरोधी ही होती तो मीरा क्यों ही कहती अपने सास ननद के बारे में कि उनकी ननद सास मीरा के नाचने गाने संतों के साथ उठने बैठने को लेकर पाबंदियां लगाती और बार बार समझाती थी कि तुम तो बड़े कुल में जन्मी हो। बड़े कुल में ब्याही और इस तरह के कार्य करके कुल की शान पर दाग लगाती हो। वो समझाती कि अच्छे वस्त्र लो, गहने-जेवर आभुषण लो, महल की सुख-सुविधा भोगो। संतों के साथ बैठने से कृष्ण प्रेम से कुछ नहीं हासिल होगा। इस संगति में दुख ही दुख है। मीरा जब महल छोड़कर चली जाती हैं उसके बाद मीरा की ननद ऊंदा मीरा को महल वापस लाने का बड़ा जतन करते हुए दिखाई देती है। उसी तरफ यह संवाद इशारा कर रहा है

उदा और मीरा बाई का यह वार्तालाप इसी विरोध और प्रतिरोध को दर्शाता है यह संवाद

ऊंदा - थाने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानो बात हमारी।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

राणे रोस कियो था ऊपर, साधो में मत जारी।

कुल की दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रही भारी।

साधो रे सग बन बन भटको, लाज गमाई सारी।

बड़ा घरा में जन्म लियो छै, नाचौ दै दै तारी।

बर पायो हिन्दुवाणै सूरज, अब बिदल में काई धारी

मीरा गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी।

मीरा- मीरा बात नहीं जग छानी, ऊंदा समझो सुघर सयानी

साधू मात पिता मेरे, सजन सनेही ग्यानी।

सत चरण की सरण रैण दिन, सत् कहत हूं बानी।

राणा ने समझाओ जाओ, मैं तो बात न मानी।

मीरॉ के प्रभू गिरधर नागर संता हाथ बिकानी।

ऊदां- भाभी ! बोलो बात विचारी

साधो की संगति दुःख भारी, मानो बात हमारी

छापा तिलक गलहार उतारों, पहिरो हार हजारी

रतन जड़ित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी

मीरा जी थे चालो महल में थाने सोगन म्हारी

मीरा- भाव भगत भूषण सजे, सील सतो सिंगार

ओढ़ी चूनर प्रेम की म्हारो गिरधर जी भरतार

ऊंदा बाई मन समझ, जाओ अपने धाम

राज पाट भोगो तुम ही, हमसे न तासूं काम ।[viii]

आसान नहीं रहा होगा मीरा के लिए राजपुताने की धरती से बाहर निकलकर यात्रा करना । सामंती समाज और उस समय कोई बस कार तो चलती नही थी यातायात के साधन भी न इतने उपलब्ध थे । दूसरा, रास्ते भी इतने अच्छे नहीं रहे

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

होंगे कच्ची मिट्टी के रास्ते कभी आंधी बरसात मौसम का कहर तो बरसता ही होगा। प्रकृति तो अपना कार्य तो करना नहीं छोड़ देगी रात दिन होना। चलते-चलते रात भी हो जाती होगी ऊपर से एक महिला फिर चुनौतियों को सारी सहते हुए मीरा फिर भी दिल्ली आगरा मथुरा वृन्दावन आयी थी। ये वही कर सकता है जो वास्तविक रूप से योद्धा होगा निडर होगा। मीरा अपने आपको महज स्त्री भर समझती महज देहभर समझती तो कभी न इन चुनौतियों का सामना कर पाती। ऐसे बाहर सब त्याग कर न निकल पाती। वो भी चाहती बाकी आम महिलाओं की तरह की उनके कंधे पर किसी भौतिक पुरुष का हाथ हो जो उन्हें हर तूफानों से बचा सके। लेकिन मीरा स्त्री बची ही कहां थी उनका प्रेम तो उस चरमावस्था पर था जहां व्यक्ति को अपनी सुध रहती ही नहीं उन्होंने तो सबकुछ अपने गोविंद को समर्पित कर दिया था तन मनजीवन प्राण हर भय हर एक चुनौती। इसी प्रेम की शक्ति लेकर मीरा हर एक चुनौती से पार होती गयी। उनको कोई नहीं रोक सका। योद्धा प्रेमी के लिए तो बस अपनी स्वीकृति चाहिए होती है बस। जिस पल में उसकी आत्मा से, स्वयं से हां का आह्वान हो गया उसे संसार की कोई वस्तु कोई व्यक्ति नहीं रोक सकता है। मीरा को भी अपनी हां का अपनी स्वयं की स्वीकृति मिल चुकी थी इसीलिए वो सब छोड़कर निकल आयी उस महल से। निंदा करने वाले प्रेम के विरोधी उन लोगों के बीच से।

मीरा कहतीं हैं –

तेरो कोई नहिं रोकणहार, मगन होइ मीरां चली।

लाज सरम कुल की मरजादा, सिर सै दूरि करी।

मान अपमान दोउ घर पटके, निकसी हूं ग्यान गली।

ऊंची अटरिया लाज किवड़िया, निर्गुण सेज बिछी।

पचरंगी झालर सुभ सौंहे फूलन फूल कली।

बाजूबंद कड़ूला सोहे, सिंदूर मांग भरी।

सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधक खरी।

सेज सुखमणा मीरां सोहै, सुभ है आज घरी।

तुम जावो राणा घर अपणों, मेरी तेरी नाहिं सरी।[ix]

मीरा इस लिए भी योद्धा थी कि समाज भले इस चीज को स्वीकारोक्ति दे दे कि ठीक है आप अगर अधिक ही आराधक है तो ईश्वर को पिता पुत्र और किसी रूप में मान लीजिए चलेगा। लेकिन पति के रुप मानना तो मानों उसकी पैरों की जमीन ही किसी ने छीन ली हो, या उसके पुरुषत्व पर सीधा सीधा प्रहार कर दिया गया हो। और फिर उसको पुरुष मानना जो दुनिया की नजर में है ही नहीं, दिखता ही नहीं प्रत्यक्ष प्रकट रूप में। बिल्कुल गायब कि समाज देख ही न सके उसको।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

तब तो और भी गड़बड़ और भी अपराधिनी थी मीरा उन सबकी नजर में। मीरा तो मीरा थी उन्होंने यह भी नहीं कहा चलो भाई समाज का, ससुराल का, घर वालों का मान रखने के लिए एक भौतिक दुनिया का पति है, समाज द्वारा गठबंदित पति और एक आसमान वाला पति। भौतिक मिलन और आध्यात्मिक मिलन का तालमेल बिठाकर समाज का मान रखते हुए यही करते हैं। यह नहीं हो पाया मीरा से यह नहीं किया उन्होंने, मीरा तो सीधे-सीधे इसी पर अड़ी थी कि पति तो मेरे गोविंद ही होगें और रहेंगे दूसरा कोई नहीं विकल्प नहीं न किसी भौतिक पुरुषपति के लिए कोई जगह ही उनके जीवन में।

मीरा कहती हैं -

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।

जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई।

तात मात भ्रात बंधु आपनो ने कोई।

छांड़ि दई कुल की कानि कहा करिहैं कोई।

संतन ढिंग बैठि- बैठि लोकलाज खोई।

चुनरी के किए टूक ओढ़ लीन्ही लोई

मोती मूंगे उतार बनमाला पोई।[x]

मीरा का यह बेबाकपन और निर्भीक रुप इस तरह लोक मर्यादा त्यागने की यह बात न तो राणाओं को हजम हो रही थी। न तो उस समाज के ठेकेदारों और रखवालों को जिन्होंने समाज को सुचारू रूप से चलाने का सारा जिम्मा अपने ऊपर ले रखा था। गोया वो इसी कार्य के लिए जन्में हों। मीरा यह बात चुपके से भी न कह रहे थी कि मेरा पति गोंविद है मेरी उसकी प्रीति पुरानी है। बल्कि पूरी निडरता और ताल ठोंककर प्रेम में बावली होकर राणा के सम्मुख बिना किसी घूंघट के पर्दा करके बिना किसी की परवाह किये हुए कहती थी। यह समाज को और राणा और सुसराल के बाकी सदस्यों को भला कैसे रास आता। राणा को तो जैसे कैसी मुंह की खाएं जैसा प्रतीति हो रहा होगा वह तो वही जानते थे। जब मीरा अपनी प्रीति पुरानी और गोविंद के पति होने की बात करती होंगी।

मीरा कहतीं हैं राणा से-

राणा जी म्हारी प्रीत पुराणी, मैं काई करूं।

राम नाम बिन घड़ी न सुहावै,

राम मिलै म्हारा हियरा ठराय।[xi]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

मीरा बताती है कि उनको पहरे में रखा गया। ताला भी जड़ा दिया गया। दरवाजे के बाहर ऐसी कड़ी निगरानी कर रखी थी राणा ने। क्योंकि मीरा भक्ति में डूबकर अपने आराध्य से बात करने लगती थी। उनके सांस ननद जेठानियों, राणा को लगता था कि मीरा के कमरे में कोई बाहरी व्यक्ति आता है। लेकिन जब उनकी यह बात यह शंका भी असत्य निकली तो राणा और द्वैषभाव रखने लगा मीरा से । जलन खाकर राणा मीरा की भक्ति प्रेम और समर्पण को देखकर उन्हें महल में कैद कर दिया पहरे के बीच ।

मीरा इस बात का जिक्र करते हुए कहती हैं -

हेली म्हासूं हरि बिन रह्यो न जाए।

सास लड़ै मेरी ननद खिजावै, राणा रह्या रिसाय

पहरो भी राख्यो चौकी बिठारियो, ताला दियो जड़ाय।

पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूं छोड़ी जाए।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर और न आवे म्हारो दाय।[xii]

मीरा अपने प्रेम का कोई गुप्त तरीके से भी नहीं कर रही थी जो समाज थोड़ा हमदर्दी जताता उनके प्रति। महिला होकर और ऊपर से प्रेम की बात करना। प्रेमी व्यक्ति और प्रेम सदा ही समाज की आंख की किरकिरी रहा है, और जब कोई महिला और ऊपर से किसी घर की बहू होकर स्त्री ऐसी बात करे तो यह समाज उसकी ज़बान ही न खींच लें। मीरा ऐंवें ही नहीं अपने को कहती हैं कि वह दरद दीवानी है। या सूली के ऊपर उनकी सेज है जिससे गुजरते हुए उस पिया से मिलना है जिसकी सेज है गगन मंडल में है । मतलब इतनी ऊंचाई पर इतनी पवित्र और सत्य के पास। सत्य के पास बैठना है तो सूली क्या कांटों पर भी चलना पड़ेगा। यह समाज आपको हर एक दर्द देकर आपसे आपकी स्वतंत्रता आपकी निजता आपका सत्य छीनने की कोशिश करेगा ।

मीरा का दर्द पीड़ा तो केवल वही जानती होगी। हम इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि जब एक स्त्री को पूरा समाज उसके रिश्तेदार कुटुंब वाले जीना दूभर कर दें ताने मार-मारकर । उसको कुलनासी कह-कह कर । तब क्या बीतती होगी उस स्त्री पर । मीरा जैसी कोई मजबूत, प्रेमी योद्धा, अपमान का, जहर का प्याला पीकर स्त्री ही जिंदा रह सकती है। शंकर बन पाती है । और अमर हो जाती है हमेशा के लिए। मिशाल छोड़ जाती है उस समाज के लिए भी और उस स्त्री समाज के लिए जिन्हें पुरुष समाज अबला दीन-हीन भोग की वस्तु समझता है। मीरा इस समाज द्वारा दिये जा रहे दर्द और अपने आराध्य के विरह का दर्द और अपने आराध्य को वैद्य भी घोषित करते हुए कहती हैं -

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

हेरी में तो दरद दीवानी होई, दरद न जाणै मेरो कोइ।

घाइल की गति घाइल जाणै, कि जिण लाई होइ।

जौहरि की गति जौहरी जाणै, की जिन जौहरी होइ।

सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होइ।

गगन मंडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ।

दरद की मारी वन-वन डोलूं वैद मिल्या नहिं कोई।

मीरा के प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद सांवलिया होइ।[xiii]

मीरा का वह समाज इस योद्धा को इसलिए भी स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि मीरा औरतों की टोलियों में नाचें गाये तो समझ भी आता उनको। मीरा तो संगत करती पुरुष संतों की। उनके साथ सत्संग करती। प्रभू के गीत गाती, नाचती। नाचते-गाते कभी-कभी मूर्छित भी हो जाती । ऐसा संगति की प्रीति जगी थी , अपने कृष्ण के प्रति ऐसी प्रेमाभक्ति जगी थी कि मीरा को अपने जैसों की संगति भाने लगी थी ।

कोई कछु कहे रे रग लाग्यो, रग लाग्यो भ्रम भाग्यो।

लोग कहै मीरा भभी बावरी, भ्रम दूनी न रवा गयो।

कोई कहे रग लाग्यो।

मीरा साधा में यूं रम बैठी, ज्यूं गुदड़ी में तागो।

सोने में सुहागी।

मीरा सूती अपने भवन में, सतगुरु आए जगा गयो।

ज्ञानी गुरु आए जगा गयो।[xiv]

मीरा स्वयं कितनी बार ही यह स्वीकार करती है कि घर परिवार सगे संबंधी उन्हें काल के समान लगने लगे थे । उनके मन तो साधू संगति और कृष्ण प्रेम रंग चढ़ा था ।

दे माई म्हाको गिरधर लाल।

थारे चरणा की आनि करत हो, और न मणिलाल।

नात सगो परिवारो सारो, मने लागे मानो काल।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

मीरां के प्रभू गिरधर नागर, छवि लखि भई निहाल।[xv]

आप सोचकर देखिए मीरा का वह समय जबकि आज हम भले आधुनिक कहें अपने आपको अपने समाज को। लेकिन इस आधुनिक समाज में भी जो सारी कि सारी सीमाएं बनाई गयी है वह स्त्री के लिए ही है। आज भी स्त्री पुरुष का जोड़ा प्रेमी प्रेमिका का जोड़ा समाज की नजर में किरकिरी ही होता है। उन्हें रास नहीं आता जब तक तिरछी निगाहों से उनको घूर न लिया जाए। दो चार बातें मन में बुदबुदा न दिया जाए। और जब यह पता लग जाए कि लड़का या लड़की दोनों अलग-अलग जाति बिरादरी से आतें हैं तब तो समाज के लिए यह कलंक और इज्जत से खेलने का गम्भीर मुद्दा बन जाता है,न सिर्फ समाज के लिए घर परिवार के लिए भी। फिर इसी के चलते खाप पंचायतें निर्णय लेती है इस इज्जत को बचाने का और दोनों प्रेमियों को अलग करके समाज घर परिवार से। पेड़ों पर फांसी के फंदों तक लटकवा देती है। मीरा के समय की तो क्या ही बात थी उनको भी लाख बार रोका गया बड़े और इज्जतदार घराने की बहू का हवाला देकर बार- बार सास,ससुर, ननद ने ऐतराज जताया इस तरह खुले रूप से साधू संतो के साथ नाचने को लेकर। कि मीरा तो ताली बजाकर-बजाकर उनकी इज्जत की धज्जियां उड़ा रही है साधूं संतों के बीच । साथ ही नीची जाति का गुरु बनाने को लेकर । और जब स्त्री होकर यह सब किया जा रहा हो तो उस कुलीन राजपुताने के संगे संबंधियों को यह सब कैसे सुहाता होगा यह अंदाजा लगाया मुश्किल न होगा। मीरा इसका जिक्र करते हुए लिखती हैं कि कैसे उनके सास ससुर ननद इस खुलेपन को लेकर उनकी निंदा कर रहे थे । ऐसा व्यवहार न करने को कह रहे थे ।

मीरा के शब्दों में –

मीरा मान लीजो म्हारी, हो जी थाने सखियां बरजे सारी ।

राणा बरजे, राणी बरजे, बरजे सब परिवारी।

कुवर पाटवी सो भी बरजे, और सहेल्या सारी।

सीस फूल सिर ऊपर सोहै, बिदली शोभा भारी।

साधन के संग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी।

नित प्रति उठि नीच घर जाओ, कुल को लगाओ गारी।

बड़ा घरा की छोरु कहावो, नाचो दे दे तारी।

वर पायो हिन्दुवाणे सूरज, इब दिल में काई धारी।

तारयो पीहर, सासरो तारयो, माए मोसाली तारी।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

मीरा ने सद्गुरु मिलिया जी, चरण कमल बलिहारी।[xvi]

मीरा ने भी उन्हीं को गुरु माना जो समाज के सबसे निचले पायदान से आते थें। पहले तो एक औरत होना मीरा का, दूसरा राजपूतों की शान उनके घर की बहू और गुरु कौन? रैदास! जो समाज की सबसे निचले तबके से आते थे। यह तो और बड़ा अपराध लगा होगा मीरा का उस पितृसत्तात्मक सोच के पुजारियों को उस समाज के लोगों को जो भक्ति और आराधना का हकदार केवल और केवल सवर्ण लोगों को ही मानता था। जिनकी हाथों में बागडोर थी यह तय करने की कि कौन भक्ति करेगा, कौन ईश्वर के निकट होगा और कौन नहीं। भक्ति संतों ने इन सारी विचित्र बातों को ही पलट कर रख दिया था यह मार्ग खोलकर कि भक्ति तो सबकी है। ईश्वर तो सबका है। किसी विशेष जाति धर्म लिंग का नहीं। और ऐसे सोच के लोगों से मीरा मिली होगी तो समाज के लिए तो और भी असहनीय हुआ होगा।

मीरा ने तनिक भी परवाह नहीं की कि समाज उन्हें क्या दर्ज़ा देगा। वो हर एक ऐसे ओछे विचारों से बाहर निकलकर लोकलाज-मर्यादा त्यागकर ही रैदास को अपना गुरु बनाई थी। रैदास जैसा गुरु पाकर मीरा भूली न समाती थी कहतीं हैं –

सेवा साधु जनन की, म्हारे राम मिलन की आस।

लाजै पीहर सासरो, माईतणौ मौसाल।

सब ही लाजै मेडतिया जी, थॉसू बुरा कहै संसार।

चोरी करूं न मारगी, नहिं करूं अकाज।

पुत्र के मारग चालतां, झक मारो संसार।

नहिं मैं पीहर सासरे, नहिं मैं पिया के साथ।

मीरा के गोविन्द मिलिया जी, गुरु मिलया रैदास।[xvii]

मीरा के काव्य से पता चलता है कि जब मीरा अपनी ससुराल छोड़कर संत समाज के बीच आ जातीं हैं। या कह लीजिए राणा की उस चौकठ को छोड़कर अपने लिए नया मार्ग नया जीवन चुनती है तो जाहिर सी बात है राणा को उसके समस्त कुटुंब को धक्का तो लगा ही होगा इस बात का कि मीरा उनकी घर की बहू उनके ज्ञान मर्यादा को ऐसे पैर तले कुचलकर निकल गयी जो उनकी शान थी। लेकिन इस दर्द को छुपाकर मीरा को उनकी धारा से हटाकर राणा ने पुनः कोशिश की होगी मीरा को महल वापस लाने के लिए। जिस पर मीरा का राणा को दो टूक का जवाब मिलता है कि राणा मुझे तुम्हारा देश, तुम्हारी नगरी नहीं भाती क्योंकि उसमें साधूं संतों का कोई आदर सत्कार नहीं है न ही साधू संत वहां बसते हैं। कूड़े के समान अधर्मी लोग बसते हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

मीरा कहती हैं –

नहिं भावै थारो देसडलो रग रूडो।

थारे देश में राणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ो

गहना गाठी राणा हमसब त्याग्या, त्याग्या बाधन जूडो

मेवा मिसरी मैं सब त्याग्या, त्याग्या छै सक्कर बूरो

तन की आस कबहूं नहिं कीनी, ज्यूं रण माही सूरो

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, वर पायो मैं पूरो।[xviii]

मीरा के संग-संग नाचने वाले पुरुष संतकवि पुरुष का अंहकार मिटाकर ही भक्ति प्राप्त की थी इसलिए वो स्वीकार पायें इस योद्धा को इसके विचारों को। जबकि इसी में कुछ ऐसे संत महात्मा थे जो कृष्ण की आराधना तो करते थे। लेकिन कृषनत्व को न समझ पाये। न ही प्रेम का रस पान कर पायें, न अपनेपुरुष भिमान का त्याग कर पायें। इसी के चलते ही उन्होंने मीरा को मंदिर में प्रवेश करने से और मुलाकात करने से रोक दिया महिला जानकर। मीरा जिस समय वृदांवन पहुंची थी उस समय वहां के मन्दिर में गौडीय संत श्री रूप गोस्वामी का प्रभाव था जिन्होंने मीरा से मन्दिर के भीतर प्रवेश करने से और संवाद करने से मना कर दिया था। अपने वैरागी या कह लीजिए पुरुषभिमान के चलते, क्योंकि संत सन्यासी के लिए स्त्री की छाया मतलब नरक का द्वार, साधना को भंग करने वाली एक छवि थी। लेकिन मीरा जैसी बेबाक और प्रेम की पारखी क्यों ही पीछे हटती। एक ही पल में संत महाराज को आइना दिखा दिया वास्तविक भक्ति का ज्ञान का वैराग्य का और उनके पुरुषत्व पर सवाल खड़ा करके कि पुरुष तो एक ही है वृंदावन में कृष्ण बाकी सब गोपियां। आप सोचिए पुरोहित महाराज कितने पानी में रह गयें होंगे। उनको भी एहसास हुआ और वह भी दीवाने हो गये मीरा के उनकी भक्ति और प्रेम के।

वृंदावन के संत से मीरा कहती हैं -

हुतों जाणती के ब्रजमां पुरुष छै एक

ब्रजमां वसी के तमे पुरुष छो, भलो तुमारो विवेक[xix]

कोई भी समाज हो किसी भी काल का उसमें रहने वाली स्त्रियां उस समाज के लिए पुरष मात्र के लिए तभी ही पूजने योग्य और सुशील सज्जन और अच्छी स्त्री मानी जाती है जब तक वह समाज द्वारा परिवार द्वारा निर्मित सीमाओं में रहती है। जैसे ही वह इन सीमाओं से बाहर पैर निकालती हैं अपने पंखों की उड़ानों की लिए या जब घोषणा करती है अपनी

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

स्वतंत्रता की अपने मनमुताबिक जीवनजीने की। वैसे ही वै स्त्रियां जोकि समाज के लिए परिवार के लिए अच्छी मानी जाती थी सुशील मानी जाती थी एक पलमें ही वह कलंकिनी कुलनाशिनी इज्जत की धज्जियां उड़ानें वाली डायन बन जाती है। यही तो होता चला है इस पुरुष-प्रधान समाज में और आज भी खूब होता है। भले महिलाएं किसी बड़े ओहदे पर क्यों ही न हो? क्यों ही न वो व्यस्था को संभाले हो? लेकिन उनके निजी जीवन की व्यवस्था निर्णय तो परिवार समाज नाते-रिश्तेदारों द्वारा ही संभाली जाती है। जब जीवन साथी चुनने की बात हो तब तो कहना ही क्या। मीरा इसी झूठी ऊपरी मान्यताओं को त्यागकर बाहर निकली थी। मीरा यह कहने में कोई संकोच न करती थी कि राणा जी यह बदनामी ही मुझे अब भाती है। क्योंकि सज्जन सुशील बनने में अपना सौदा जो करना पड़ता है अपनी जिंदगी का अपनी स्वतंत्रता का अपने निज विचारों का। यहां तक कि अपने शरीर का और मन का भी तो इससे अच्छा तो यह बदनामी ही है। कम से कम इसमें अपनी स्वतंत्रता अपनी कुछ तो पहचान है कुछ तो अस्तित्व बाकी है। उस सज्जन सुशील कैदी बन जीने में उस समाज में

मीरा कहती हैं राणा से –

राणाजी म्हाने या बदनामी लागे मीठी।

कोई निन्दों कोई बिन्दों, मैं चलुंगी चाल अनूठी

साकली में सतगुरु मिलिया, क्यूंकर फिरूं अनूठी

सतगुरु जी सू बाता करता, दुरजन लोगां ने दीठी।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अंगीठी।[xx]

मीरा का साधु संत के साथ उठना बैठना समाज के उस वर्ग के लिए भी एक सवाल पैदा करता था उस पर सवाल उठता था जो भक्ति की धारा में अपने को सर्वोच्च समझते थे अपनी पुरुष जाति को लेकिन स्त्री का साथ उनके लिए माया जैसी थी कभी स्त्री को नरक का द्वार की संज्ञा प्रदान की जाती कभी साधना को भंग करने वाली नारी जिसकी गिरफ्त में आते पुरुष संत भुजंग की भांति अंधे होने लगते उसकी मात्र छाया पड़ने से। मीरा ने तो कभी नहीं कहा कि पुरुषसंतों ने या आम पुरुष से उनकी साधना भंग होने लगती है और उनमें कामुक इच्छाएं प्रबल हो जाती है या पुरुष की छाया मात्र पड़ने से उनके भीतर की रति अंगड़ाइयां लेना शुरू हो जाती है। मीरा ने किसी पद में नहीं कहा यहां तक कि राणा से जब बात करती है तो ऐसा प्रतीत नहीं होता कि पीठ उसकी तरफ और चेहरा आंखें दूसरी दिशा को ताकती हुई। बेबाक होकर राणा की आंख में आंख डालकर मीरा हर बात कहती हुई दिखती है। और यही भाव यही रूप मीरा का मन्दिर के पुजारी के सामने भी था । मीरा के भीतर भक्ति का गुमान और रति के जग जाने का भय नहीं दिखता क्योंकि उन्हें अपनी इन्द्रियों को संभालना आता था । और बाकी महिला संतकवियों ने भी कभी इस तरह का आरोप नहीं लगाया पुरुष संत कवियों पर । ये केवल

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

पुरुषों के दिमाग की खुराफातें होती है और पुरुषभिमान भी कि उनकी ही भक्ति उनका ही वैराग्य सर्वश्रेष्ठ है खरा और असली है शुद्ध है बस जब तलक स्त्री की छाया न पड़े उस पर।

कबीर हों तुलसी हो शंकर हो या विवेकानंद या पीपा और भी होंगे स्त्री उनकी नजर में कभी न कभी साधना भंग करनेवाली ही रही।

मीरा की इस निडरता इस प्रेम की इतनी चर्चा थी या कह लें कि ऐसा प्रभाव था उनका या कि मीरा योद्धा थी शायद इसीलिए हिन्दुस्तान का बादशाह अकबर भी उनकी एक झलक पाने के लिए इतना लालायित था कि एक रोज वह भेष बदलकर मीरा के सत्संग में शामिल हुआ था। ऐसा कहा जाता है जो भी हो लेकिन मीरा हो या अन्य संत कवि वो समाज की मुखरित आवाज थे न कि हाशिये पर खड़े लोगों। वे अपने समाज की आवाज थे। उन आमजनमानस की आवाज थे जिन्हें तलाश थी सहज सरल भक्ति की और जीवन जीने की कामना की

पुरूषोत्तम अग्रवाल लिखते हैं –

"आजकल कबीर मीरा रैदास और मीरा को हाशिए की आवाजें मानकर पढ़ा जा रहा है। सवाल यह है कि इतिहास लेखन में कबीर आदि को हाशिए के लोग बनाया किसने। जिस समय का इतिहास लिखने के दावे किये जातें हैं,उस समय तो कबीर व्यापारियों में सर्वाधिक मान्य हैं। समाज के अन्य शक्तिशाली लोगों में भी उनकी मान्यता है रविदास की शिष्या मीरा थी, या कोई और झाली रानी या महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण यह है कि 'अछूत' की इतनी मान्यता थी कि कोई रानी उनके शिष्य बनना चाहे, और खुराफाती ब्राह्मण मुंह की खाएं"[xxi]

निष्कर्ष:

कहना न होगा कि मीरा महज एक कृष्ण प्रेमी भर थी। मीरा भारतीय मध्यकाल की वह महिला थी जिन्होंने सामाजिक बंधनों से, पितृसत्तात्मक व्यवस्था से बगावत की थी। अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने निज पहचान के लिए अपने जीवन जीने की आजादी अपने प्रेम के लिए। मीरा की तरह आज भी कोई महिला इसी स्वतंत्रता और लोक लाज मर्यादा को त्याग कर अपनी निज आजादी को पाने का आह्वान करे। अपने तरीके से जीवनजीने और पुरुष कामना को त्याग एक परमात्मा को पति मानकर सोलह श्रृंगार करें या जोगन बने, प्रेम में बावली हो नृत्य करें और प्रेम के गीत गाये तो यह समाज में परिवार नाते रिश्तेदार एक ही पल में जहर का प्याला लेके मारने दौड़ेंगे। जीना मुहाल कर देंगे। कुलछनि कुलनाशिनी डायन कलंकिनी का तमगा उसके गले में डाल देंगे। पागल मेंटल घोषित कर देंगे। समाज तो वहीं है उसी के बीज से पनपा है भले आधुनिक बन गया हो पहनावे खानपान में। चेतना के स्तर पर, विचारों के स्तर पर इसमें कोई तब्दीली नहीं आयी है। वहीं का वही खड़ा है यह समाज और इसकी मान्यताएं उसकी परमपराएं। मीरा के गुणगान भले गाये आज का समाज की मीरा प्रेम दिवानी कहाने लगी , या कृष्ण की प्रेम में पागल मीरा। लेकिन असल जिंदगी में अपने घर में अपने आसपास

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

पडोस में मीरा जैसी कोई निकल जाए तो बर्दाश्त नहीं कर पायेगा ये समाज और परिवार। इस तरह की बातें समाज को केवल किस्से-कहानियों गीतों तक ही सीमित होकर अच्छी लगती हैं असल जिंदगी में नहीं। दूसरी एक चतुराई यह भी की गई कि मीरा का आलौकिक जगत का घोषित कर, आलौकिक प्रेम का गीत गाने वाली, कृष्ण की भक्ति में रमने वाली साधिका के रूप में अधिक एक छवि स्थापित की गयी समाज के सामने बजाए इसके कि मीरा एक विद्रोही थी और पुरुष प्रधान समाज के ढांचे उस व्यवस्था को तोड़ने वाली उससे जिरह और संवाद करने वाली एक स्वतंत्र स्वच्छंद तरीके से जीने वाली एक मजबूत और निडर स्त्री। समाज को पता है कि वह अगर ऐसा दिखायेगा तो पहले पहल भय उसके पुरुष अंहाकर मिटने का दूसरा उसके द्वारा बड़े जतन से स्थापित की गयी सामाजिक व्यवस्था को भरभराकर गिरने का तीसरा लोक लाज मर्यादा की सीमाओं में कैद स्त्री के स्वतन्त्र हो जाने को और समाज की इज्जत पर बट्टा लगने का है। तो क्योंकर ही वह मीरा को ऐसी बेबाक स्त्री के रूप में देखेगा कृष्ण भक्ति में लीन साधिका मीरा ही उनके लिए ठीक है क्योंकि साधिकाएं पारलौकिक जगत की सिद्ध हो जाती है उनका मोह माया पितृसत्तात्मक समाज है कि क्या है इससे क्या ही लेना देना वो इस दुनिया समाज से जिरह संवाद नहीं करती बस भगवदप्रेम में मगन रहती है इसीलिए मीरा का यही रूप समाज को ज्यादा पसंद आया और वास्तविक स्वरूप छिपा दिया गया

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

सन्दर्भ सूची

[i] (1669). नारद भक्ति दर्शन, बम्बई, सत्यसाहित्य प्रकाशन ट्रस्ट, पृ.सं. 252

[ii] वही, पृ.सं. 40

[iii] वही, पृं.सं. 44-258.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Sushma Yadav (2026). मीरा ! दि ग्रेट वॉरियर ऑफ राजपूताना/ मीरा ! एक प्रेम योद्धा. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(5),365-381.

[iv] जिस मरनै थै जग डरै - दोहा | हिन्दवी https://share.google/zHsnBQYolgOKWcIKN.

[v] चतुर्वेदी, परशुराम. (2004). *मीरा की पदावली,* प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पृ.सं. 16

[vi] (2009).*मीरा वृहद पद संग्रह,* बनारस, लोकसेवक प्रकाशक, पृ.सं. 9

[vii] चतुर्वेदी, परशुराम. (2004). *मीरा की पदावली,* प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पृं.सं. 11

[viii] (2009).*मीरा वृहद पद संग्रह,* बनारस, लोकसेवक प्रकाशक, पृ.सं. 10,11

[ix] चतुर्वेदी, परशुराम. 2(004). *मीरा की पदावली,* प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पृ.सं. 10

[x]मेरे तो गिरिधर गोपाल - मीराबाई| Mere To Giridhar Gopal - Meerabai. काव्यालय| Kaavyaalaya: House of Hindi Poetry https://share.google/PgJAGNicrnIMl0RG5.

[xi] चतुर्वेदी, परशुराम. (2004). *मीरा की पदावली,* प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पृं.सं. 11

[xii] वही, पृं.सं.16

[xiii] वही, पृं.सं. 27-28

[xiv] (2009). *मीरा वृहद पद संग्रह,* बनारस, लोकसेवक प्रकाशक, पृ.सं. 10

[xv] वही, पृ.सं. 9

[xvi] वही, पृ.सं.16

[xvii] वही, पृ.सं.6

[xviii] वही, पृ.सं.17

[xix] भसीन, कमला. (1999). *मीराबाई,* न्यू डेल्ही, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, पृं. सं. 13

[xx] (2009) . *मीरा वृहद पद संग्रह,* बनारस, लोकसेवक प्रकाशक,पृं.सं. 21

[xxi] एन. लॉरेंजन, डेविड. (2010). (अनु. धीरेन्द्र बहादुर वर्मा), *निर्गुण संतों के स्वप्न,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. पृ. सं. 6

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License